GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 4
Special Issue: 1
September: 2025

21वीं सदी का हिंदी साहित्य और डिजिटल युग का प्रभाव

Dr. Shaileshkumar Babubhai Talpada

सारांश

21वीं सदी का हिंदी साहित्य जहाँ नवीन दृष्टिकोण और विषय वैविध्य के साथ आगे बढ़ रहा है, वहीं डिजिटल युग ने साहित्य के सृजन, प्रकाशन और उपभोग की पूरी प्रक्रिया में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए हैं।

इस प्रकार, डिजिटल युग ने हिंदी साहित्य को नए अवसर और चुनौतियाँ साथ-साथ दिए हैं, और उसका भविष्य तकनीकी और रचनात्मक नवाचारों के साथ उज्ज्वल दिखता है।

मुख्य शब्द - डिजिटल युग, इंस्टाग्राम

प्रस्तावना

21वीं सदी का हिंदी साहित्य तकनीकी क्रांति और डिजिटल के कई माध्यमों के साथ एक नए दौर में प्रवेश कर चुका है। जिसमे इंटरनेट, ई-पुस्तक, ब्लॉग, सोशल मीडिया और ऑनलाइन मंचों ने साहित्य को न केवल नई अभिव्यक्ति दी है बल्कि उसके वैश्विक प्रसार का मार्ग भी प्रशस्त किया है। आज कविता और गद्य केवल पुस्तकालयों और पत्रिकाओं तक सीमित नहीं, बल्कि मोबाइल और कंप्यूटर की स्क्रीन पर सहज रूप से उपलब्ध हैं। जिसको जब चाहें हैं उसको उपयोग में ले सकते है

डिजिटल युग और हिंदी साहित्य का संगम

आज के समय में डिजिटल प्लेटफार्मों ने हिंदी साहित्य को एक नई ऊर्जा दी है - ई-पत्रिकाएँ और ब्लॉग: हंस, समालोचन, हिंदी समय जैसी ऑनलाइन पत्रिकाओं ने हिंदी साहित्य को जीवंत बनाए रखा है। इसके साथ आज हम सोशल मीडिया के बदोलत फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम पर लघुकथाएँ, कविताएँ और विचार त्वरित प्रसारित कर सकते हैं। आज ऑनलाइन कवि

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 4
Special Issue: 1
September: 2025

सम्मेलन: गूगल मीट, ज़ूम और यूट्यूब जैसे माध्यमों ने साहित्यिक विमर्श की नई परंपरा शुरू की है। जिसके कारण ज्यादा से ज्यादा लोग इसके साथ जुड़ रहे है। इसलिए जै नंदकिशोर नवल लिखते हैं कि - "समकालीन हिंदी साहित्य में माध्यम बदल रहे हैं, परंतु संवेदना वही शाश्वत बनी रहती है।"इनका कहने का तात्पर्य यही है कि आनेवाले समय मे भले ही साहित्य में विभिन्न परिवर्तन आये, लेकिन उसके हार्द को मिटा पाना असंभव है।

डिजिटल युग और अभिव्यक्ति में बदलाव

डिजिटल युग ने हिंदी साहित्य की अभिव्यक्ति में गहरे बदलाव किए हैं , इसके कारण आज भाषा अधिक संक्षिप्त और सरल हुई है। उसमे लचीलापन आ गया है। उसके साथ नए विषय जुड़े हैं जैसे कि तकनीकी जीवन, वैश्वीकरण, सोशल मीडिया संस्कृति। आज हम देख सकते हैं कि हिंदी कविता और कहानी में चित्र, ध्वनि और वीडियो का उपयोग बढ़ा है। हिन्दी साहित्य की कविताओं में आज हम इस परिवर्तन को भलीभाँति देख सकते है।जैसे कि हमे कवि दुष्यंत कुमार की पंक्तियाँ आज भी सटीक लगती हैं:

"हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।"

यहाँ गंगा का प्रवाह आजकल डिजिटल मंचों पर नई अभिव्यक्ति के रूप में देखा जा सकता है।

डिजिटल युग का सकारात्मक प्रभाव

हिंदी साहित्य में नए लेखकों को अवसर मिल रहे हैं जिसका मूल कारण सोशल मीडिया ने युवा रचनाकारों को सीधा मंच दिया। आज वैश्विक पहुँच के बदोलत हिंदी साहित्य सिर्फ अब केवल भारत तक सीमित नहीं, बल्कि विश्वभर में पहुँचा है और लेखक-पाठक संवाद को सिर्फ पुस्तको में सीमित न रखते हुए उन्हे डिजिटल माध्यम से हर किसी के पास भेज दिया हैं , जिसके

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 4
Special Issue: 1
September: 2025

कारण ही आज के डिजिटल युग में सभी तत्काल प्रतिक्रिया को संभव बनाया हैं। इसलिए ही नामवर सिंह कहते हैं - "साहित्य का भविष्य तभी उज्ज्वल है जब वह समय और समाज की धड़कनों से जुड़ा हो।"यानी कि समय के साथ साहित्य से जुड़े हर व्यक्ति में परिवर्तन आना चाहिए, चाहें वह डिजिटल युग के संदर्भ में ही क्यों न हो, हरेक को इन परिवर्तन को स्विकारना होगा।

- **डिजिटल माध्यम की चुनौतियाँ**

डिजिटल माध्यम से डिजिटल माध्यम से हिंदी साहित्यिक गुणवत्ता पर संकट हैं लेकिन आज के इस त्वरित लोकप्रियता के दबाव में गहराई को भापने के लिए यह जरूरी है। डिजिटल माध्यम से कॉपीराइट की समस्याओं का भी सामना करना होंगा क्युकी आज कल साहित्यिक चोरी और अनधिकृत प्रसार बढ़ा है।

जिसका परिणाम यह आया कि पढ़ने वाले पाठकों की ध्यान क्षमता कम हो रही है। इस पर गुलज़ार लिखते हैं:"तकनीक के जंगल में इंसान अकेला हो गया है, शब्द हैं पास, मगर संवाद खो गया है।"

यानी की डिजिटल माध्यम से आज हम हमारे साहित्य से दूर हो रहे हैं और एक ऐसे जंगल के बीच आ खड़े हैं की वहाँ सुविधायें बढ़िया है लेकिन उसको इस्तमाल नही कर सकते

डिजिटल मंच पर कविता का नया स्वरूप

कवि कुमार विश्वास जैसे रचनाकार डिजिटल प्लेटफार्म पर लाखों पाठकों तक पहुँचे। उनकी पंक्तियाँ -

"कोई दीवाना कहता है, कोई पागल समझता है,
मगर धरती की बेचैनी को बस बादल समझता है।"

ऐसे तो कई लेखक, कविओं ने डिजिटल माध्यम से यह बताता है कि कविता अब केवल पुस्तक का हिस्सा न होकर, यूट्यूब और सोशल मीडिया की लोकप्रिय धारा बन चुकी है। आने

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 4
Special Issue: 1
September: 2025

वाले समय में यही धारा के साथ हमारा हिन्दी साहित्य ही नही बल्कि सभी साहित्य का स्वरूप बदल जायेगा।

निष्कर्ष

21वीं सदी का हिंदी साहित्य डिजिटल युग से प्रभावित होकर नए रूप में सामने आया है। यह समय अवसर और चुनौतियों का है। साहित्य अब केवल शब्दों तक सीमित नहीं, बल्कि ध्वनि, चित्र और तकनीक के संगम से नए रूप में पाठकों के सामने है। जैसा कि अशोक वाजपेयी कहते हैं - "कविता अपने समय का आत्मसंघर्ष है।" आज यह आत्मसंघर्ष डिजिटल स्पेस में नए पाठकों और नए माध्यमों के साथ जारी है।

संदर्भ सूची

1. मिश्र, रामदरश. (2001). हिंदी साहित्य का विकास. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
2. सिंह, नामवर. (1990). हिंदी साहित्य और संस्कृति की समस्याएँ. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
3. नवल, नंदकिशोर. (2005). समकालीन हिंदी साहित्य. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.
4. वाजपेयी, अशोक. (2010). कविता का आत्मसंघर्ष. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.
5. रेणु, फणीश्वर नाथ. (1954/2018). मैला आँचल. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन (ई-बुक संस्करण).
6. हंस पत्रिका (डिजिटल संस्करण). (2023). नई दिल्ली: हंस प्रकाशन. https://www.hanshindimagazine.in
7. समालोचन ब्लॉग. (2022). https://samalochan.blogspot.com
8. हिंदी समय. (2022). https://www.hindisamay.com
9. कुमार विश्वास. (2007). कोई दीवाना कहता है. कविता पाठ, यूट्यूब.

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 4
Special Issue: 1
September: 2025

10.गुलज़ार. (2015). तकनीक और अकेलापन. (डिजिटल संकलन).